महर्षि-प्रभा

मासिक ई-पत्रिका

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

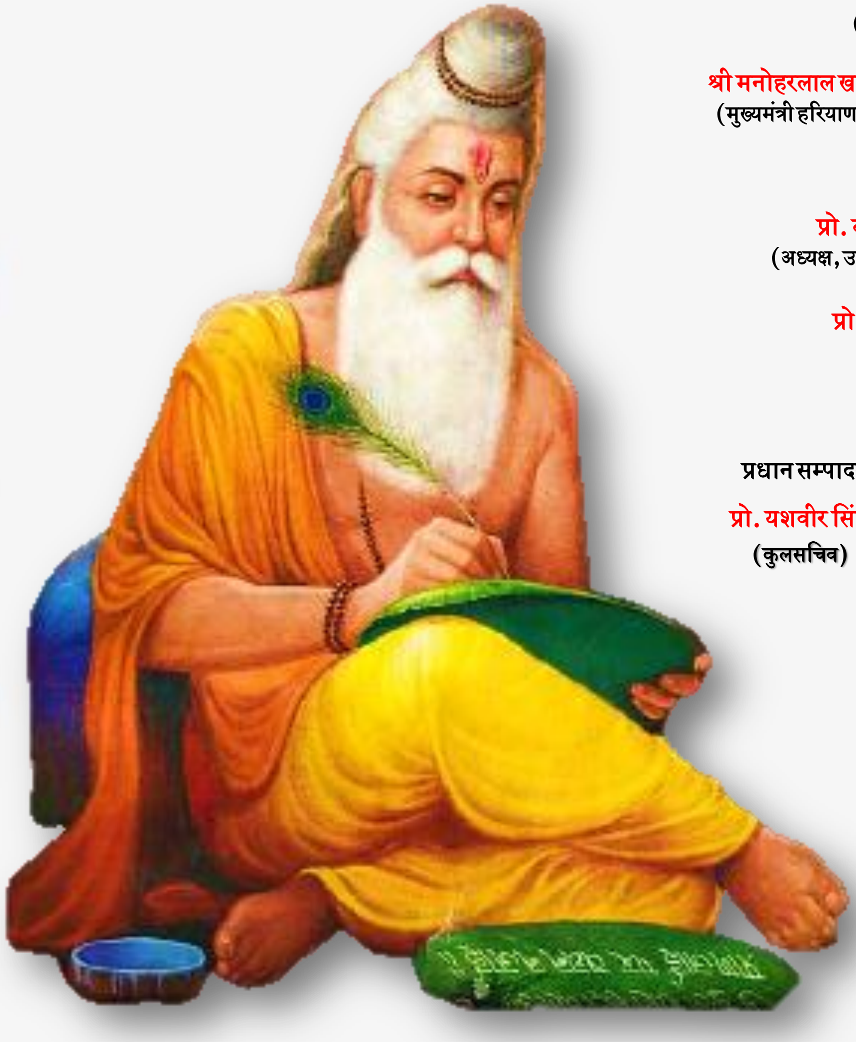

संरक्षक-

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री कंवरपाल गुर्जर
(माननीय शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक-

प्रो. बृजकिशोर कुठियाल
(अध्यक्ष, उच्च शिक्षा परिषद, हरियाणा)

प्रो. राजकुमार मित्तल
(कुलपति)

प्रधान सम्पादक-

प्रो. यशवीर सिंह
(कुलसचिव)

सम्पादक -

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक-

डॉ. शशिकान्त तिवारी
डॉ. नरेश शर्मा
डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शर्मिला

छात्र सम्पादिका
रजनी
शीतल

अंक-६
माह-
फरवरी-मार्च
वर्ष २०२२
विक्रमी संवत्
२०७८

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ॥

ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

mvsu.ac.in

MVSUOFFICIAL

युवाओं में संकल्प शक्ति को जगाने की आवश्यकता

संसार मे प्रत्येक व्यक्ति की स्वाभाविक इच्छा रहती है कि वह सुखी रहे और सबका प्रिय रहे। इसके लिए ज्ञान, सत्य प्रेम संयम और धर्म आदि गुणों का होना आवश्यक है। ये सभी आत्मा के स्वाभाविक गुण है। लेकिन व्यक्ति अपने तात्कालिक भौतिक सुख की लालसा में निरन्तर अविद्या राग द्वेष और लोभ आदि से घिरा रहता है। इन सबसे दूर रहने का उपाय तो करता है परन्तु वह उनसे मुक्त नहीं हो पाता। इन सबसे मुक्ति पाने का एक मात्र उपाय है दृढ संकल्प शक्ति।

दृढ संकल्प शक्ति प्रत्येक बाधा को दूर करके व्यक्ति को उसके इच्छित लक्ष्य तक पहुँचाने का काम करती है। जीवन में उन्नति प्राप्त करने के लिए दृढ संकल्प शक्ति अत्यन्त आवश्यक है। यहां हमें एक बात ध्यान में रखना चाहिए इच्छा का नाम संकल्प नही है। दृढ संकल्प शक्ति से ही श्री समृद्धि की प्राप्ति हो सकती है।

संकल्प अर्थात धारणा विचार एवं भावनाओं के अनुसार मनुष्य वातावरण का निर्माण करता है। वही वातावरण, परिवार, समाज और राष्ट्र के ऊपर प्रभाव डालता है। यदि मनुष्य के संकल्प में पवित्रता, आशा, उल्लास, प्रेम, उत्साह और आत्मविश्वास की भावनाएं है तो उसे सब ओर यही भाव दिखायी देता है। उसमें सकारात्मक उर्जा का अदभुद् संचार होता है और संकल्प में निराशा, नीचता, घृणा, चिन्ता, राग वैमनस्य हिंसा, शत्रुता ओर निरुत्साह की भावनाएं है तो उसमें नकारात्मकता का संचार होता है वह उस भाव से बाहर नही निकल पाता। जीवन में सफलता एवं उच्चादर्शों की स्थापना के लिए सदैव शिव संकल्प रखना चाहिए। सत्यं शिवं और सुन्दरं के रूप का साक्षात्कार करके ही जीवन में अपने उद्देश्य को प्राप्त कर सकते हैं।

सुखःदुखः, लाभ-हानि, जय-पराजय सभी अवस्थाओं में एक रस रहना दृढ संकल्पी का पहला साधन है। जीवन यात्रा में अनेक प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पडता है, परन्तु दृढ संकल्पी व्यक्ति असफल होने पर पुनः पुनः प्रयास करता है और अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है। नीच कोटि व्यक्ति किसी कार्य को बाधाओं के डर से कार्य को आरम्भ ही नही करते है। मध्यम कोटि के लोग कार्य आरम्भ तो करते है परन्तु जब बाधाएं आती है तो कार्य को बीच में ही छोड़ देते है। और उत्तम कोटि के व्यक्ति बार- बार बाधाएं आने पर भी उन बाधाओं को पार कर कार्य को अपने अन्तिम उद्देश्य तक पूरा करते हैं।

संसार में कोई भी व्यक्ति जब श्रेष्ठ कार्य करने लगता है तो उसके जीवन में अनेक बाधाएं आती हैं। कोई भी क्षेत्र विघ्नों से मुक्त नहीं है। उन बाधाओं में से मार्ग निकाल कर अपने अन्तिम लक्ष्य को दृढ संकल्पी व्यक्ति ही प्राप्त कर सकता है।

संकल्प की शक्ति महान होती है। यदि उसमें दृढता आ जाये तो वह अजेय हो जाती है। हमारे समक्ष अनेक उदाहरण इतिहास में मिलते है। गंगा पुत्र देवव्रत अपने दृढ संकल्प के साथ आजीवन ब्रह्मचर्य व्रतधारण करने की भीषण प्रतिज्ञा करके भीष्म पितामह कहलाए। सावित्री की संकल्प शक्ति के सामने यमराज को भी नतमस्तक होना पडा। आदि शंकराचार्य आठ वर्ष की अल्पायु में घर से निकल पड़े और अपनी दृढ संकल्प शक्ति के आधार पर सम्पूर्ण राष्ट्र के एकात्मकता के प्रतीक चार धामों की स्थापना की और राष्ट्रीय एकात्मकता को चिरस्थायी बनाया। दृढ संकल्पी व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपने मार्ग से विचलित नही होता है।

जब भी कोई व्यक्ति किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए दृढ संकल्प कर लेता है, तो हिमालय की उँचाई और समुद्र की गहराई भी उसके मार्ग में बाधक नहीं बन सकती। हमारी वर्तमान पीढ़ी में इसका अभाव दिखाई देता है। आज उस दिव्यत्व को पुनः जागृत करने की आवश्यकता है।

प्रो. राजकुमार मित्तल
कुलपति

सम्पादकीयम्

पर्यावरणस्य प्रदूषणमधुना विश्वस्य भीषणतमा समस्या दृश्यते। एतेन प्रदूषणेन मानवानां स्वास्थ्यं नानाव्याधिना संयुक्तं भवति। प्रदूषणस्य कारणेन एव प्राणिनां कृते न तु स्वच्छ वायुपिलभ्यते न च शुद्धं जलम्।

प्रदूषित वातावरणस्य कारणेन अधुना मानवानां जीवनं अत्यधिकं कष्टंमयं जायते। पर्यावरण प्रदूषणस्य एषा समस्या निरन्तरं वर्धमाना जायते। वायुमण्डले अङ्गाराम्लवाष्पस्य परिमाणमपि नितरां वर्धितं जातम्। पृथिव्याः उर्वरा शक्तिरपि प्रतिदिनं क्षीणैव जायते। भूमौ उत्पादितमन्नमपि प्रदूषितं जायते। कृषि कार्येषु अत्यधिकं कीटनाशकादि क्षेपणेन उत्पादितमन्नं स्वास्थ्याय अत्यधिकं हानिकारकं भवति।

प्रदूषणं न केवलं मानवेभ्यः विपत्तिकरमपितु सम्पूर्णतन्त्रस्य कृते विषदं संकटं जनयति। प्रदूषणस्य एषा समस्या भौतिकता पूर्णे आधुनिके जीवने कथं दूरी क्रियते इयमेव चित्ता सर्वाधिकी अस्ति विश्वस्य वैज्ञानिकानाम् कृते। न दृश्यते कोऽपि उपायः। प्रदूषणस्य समस्यायाः समाधानं यदि कस्यापि पार्श्वेऽस्ति तत् केवलं भारतमस्ति। पुरा भारतीय ऋषिभिः पर्यावरण-प्रदूषणस्य परिष्काराय अत्युत्तमा प्रक्रिया अन्वेषिता। प्रकृति प्राणिनां रक्षिका अस्ति यदि प्रकृतेः रक्षणं क्रियते चेत्। यदि प्रकृतेः शोषणं क्रियते च सा प्राणिनां विनाशऽकरोति आधुनिके सन्दर्भे वयं एतत् सर्वं स्वचक्षुभ्यां एवं पश्यामः।

समर्गेऽपि भारतीय वाङ्मय प्रकृते संरक्षणं कथं भवेत्? कथमस्माकं जीवनचर्चा भवितव्या। प्राकृतिक घटकानां कृते अस्माकं व्यवहारो कीदृशो भवेत् एतत् सर्वमेव अस्माकं ऋषिभिः शास्त्रेषु निगदितं वर्तते। अग्निहोत्र यज्ञादि क्रिया विधिरपि प्रकृतिं प्रति अस्माकं स्वाभाविकं दायित्वं प्रकटीकरणस्य उपक्रमः आसीत्। यज्ञेन उत्सर्जितः धूमः परिवेशस्य संरक्षणं करोति। भारतीय ऋषिः यज्ञविषये कथयति यत्-

अग्निहोत्रात्परं नान्यत्पवित्रमिति पठ्यते।
सुकृतेनाग्निहोत्रेण प्रशुद्ध्यन्ति भुवि द्विजाः॥

परमधुना तु सर्वत्र यज्ञाभावः दृश्यते। एतेन कारणेनैव अनावृष्टि अतिवृष्टि आदयः प्राकृतिक प्रकोपाः जनान् पीड्यन्ते। शुद्धवायोः अभावेन अनेके रोगाः जायन्ते! प्राणिनां जीवनं संकटापन्नं दृश्यते। अधुना आवश्यकता अस्ति अस्माकं ऋषिभिःप्रदत्ता जीवन पद्धत्याः स्वीकरणस्य। एतेनैव मानव कल्याणं भवितुमर्हति। इदमेव सुखस्य मूलम्।

डॉ कृष्ण चन्द पाण्डे
सम्पादक

महर्षि पाणिनी

येन धौता गिरः पुसां विमलैः शब्दवारिभिः
तमश्चाज्ञानजं भिन्नं तस्मै पाणिनये नमः।।

जिसने निर्मल शब्द से मानवों की वाणियों को धोकर स्वच्छ किया और अज्ञान जन्य अन्धकार को दूर किया, उस पाणिनी को नमस्कार।

महर्षि पाणिनी अष्टाध्यायी नामक अद्वितीय ग्रन्थ के प्रणेता, शब्दानुशासन के प्रथम प्रस्तोता तथा 'शिक्षासूत्र' के रचयिता हैं। परन्तु उनका जीवनवृत आज भी मेघाच्छादित भानु की भांति है। विभिन्न पाश्चात्य विद्वानों एवं आधुनिक भारतीय विद्वानों के अनुसार उनका जीवन काल ईशा पूर्व 7 वीं शताब्दी माना गया है, परन्तु युधिष्ठिर मीमांशक के अनुसार उनका समय वि०पू० 2900 वर्ष का माना गया है। प्राचीन ग्रन्थों में उनके अनेक नाम देखने को मिलते हैं यथा पाणिन, पाणि, दाक्षीपुत्र शालङकि, शालातुरीय व आहिक। इन नामों के अतिरिक्त पाणिनेय व पाणिपुत्र नाम भी उनके लिए प्रयुक्त किये गये हैं। इन सभी नामों का उल्लेख पण्डित पुरूषोत्तम देव ने अपने 'त्रिकाण्डशेष' नामक ग्रन्थ में किया है। कात्यायन और पतञ्जलि ने पाणिनी नाम का ही उल्लेख किया है।

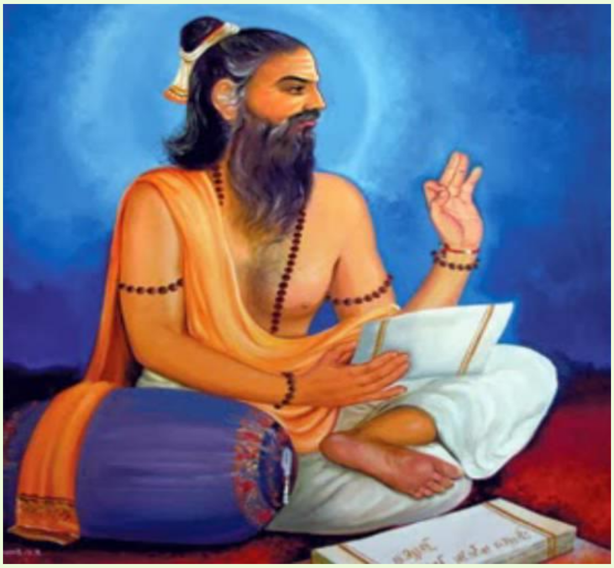

वंश व जन्म स्थान - पाणिनी के जन्म एवं जन्म स्थान के विषय में अनेक मत हैं। महर्षि पाणिनी के जीवन के विषय में पं० शिवदत्त शास्त्री ने अपने 'महाभाष्य' की भूमिका में लिखा है कि पाणिनी के पिता का नाम शालङ्ग था तथा उनका प्रारम्भिक नाम शालाङ्कि था। उनका जन्म अटक के निकट शालापुर नामक ग्राम में हुआ था। जो 'लाहुर' कहलाता था जो समवत: आज लाहौर (पाकिस्तान) के नाम से जाना जाता है। वेबर के अनुसार पाणिनी उदीच्य प्रदेश के निवासी थे क्योंकि शालंकियों का सम्बन्ध वाहीक देश से था। चीनी यात्री श्यूआङ्-चुआङ् के अनुसार पाणिनी गांधार देश के निवासी थे। उनका जन्म स्थान शालापुर गांधार (अफगानिस्तान) में स्थित था इसी कारण वे शालापुरीय कहलाये। उनकी माता का नाम दाक्षी था इसी कारण उन्हें दाक्षीपुत्र कहा जाता था। अधिकांश मत शालातुर को ही पाणिनी का जन्म स्थान होने की पुष्टि करते हैं। भारत भ्रमण के समय चीनी यात्री युआन च्यांग शालापुर गांव भी गया था, वहां उसने पाणिनी की अनेक दन्तकथाएं सुनी। उनके अनुसार शालातुर में पाणिनी की एक प्रतिमा भी स्थित थी वह प्रतिमा आज भी लाहौर के संग्रहालय में स्थित है।

पाणिनी का समय - महर्षि पाणिनी के जन्म स्थान के अनुसार ही उनके समय के विषय में भी अनेक मत हैं। अनेक पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों ने उनके समय के विषय में भिन्न-भिन्न मत दिये हैं। डॉ० पीटर्सन के अनुसार पाणिनी का समय ईसा का प्रारम्भिक भाग है। जबकि वेबर तथा मैक्समूलर उनके समय को ईसा पूर्व 500 वर्ष मानते हैं। डॉ० ओथीयोथलिंक के अनुसार पाणिनी का समय 350 ईसा पूर्व है।

डॉ. राम कृष्ण भण्डारकर तथा गोल्डस्टकर के अनुसार पाणिनी का जन्म 700 वर्ष ईसा पूर्व स्वीकार किया गया है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल उनका जन्म ईसा पूर्ण 500 वर्ष मानते हैं। पं० युधिष्ठिर मीमांसक का कहना है कि पाणिनी का समय 2900 ईसा पूर्व का है। मैक्समूलर पाणिनी व कात्यायन को समकालीन मानते हुए पाणिनी का समय 350 ईसा पूर्व स्वीकार करते हैं। अभी तक के प्राप्त शोध के आधार पर पाणिनी का समय 700 ईसा पूर्व माना जा सकता है।

पाणिनी का काव्य परिचय - पाणिनी केवल वैयाकरण ही नहीं अपितु सहृदयी कवि भी थे उन्होंने अष्टाध्यायी के अतिरिक्त अनेक अन्य ग्रन्थों का प्रणयन किया। महाभाष्य प्रदीपिका से ज्ञात होता है कि पाणिनी ने अष्टाध्यायी के अतिरिक्त धातुपाठ, गणपाठ उणादि सूत्र तथा लिङ्गानुशासन की रचना की। पाणिनी ने अष्टाध्यायी के सूत्रों को समझने के लिए वृत्ति भी लिखी थी। किन्तु वह उपलब्ध नहीं है। इसका उल्लेख महाभाष्य में है। पाणिनी ने शब्दोचारण के ज्ञान के लिए 'शिक्षा सूत्र' की रचना की। पाणिनी के शिक्षा सूत्रों को 'वर्णोच्चारण शिक्षा' के नाम से 1936 में प्रकाशित किया गया। इसके अतिरिक्त पाणिनी के द्वारा 'जाम्बवती विजय' (पाताल विजय) नामक एक महाकाव्य की रचना की गयी। राजशेखर तथा क्षेमेन्द्र ने भी इस महाकाव्य को पाणिनी का ही माना है। पाणिनी के द्वारा एक और ग्रन्थ लिखा गया है जो 'पार्वतीपरिणय' के नाम से ख्यात है। डॉ० आफैट ने पाणिनी को केवल वैयाकरण न मानकर एक सहृदयी कवि स्वीकार किया है। 'जम्बवती विजय' नामक महाकाव्य में पाणिनी ने श्रीकृष्ण द्वारा पाताल में जाकर जाम्बती से विवाह तथा उसके पिता पर विजय प्राप्ती का वर्णन किया है। इसी कारण जम्बवती विजय को 'पाताल विजय' के नाम से भी जाना जाता है। जम्बवती विजय नामक महाकाव्य में 18 सर्ग हैं।

पाणिनी द्वारा प्रणीत 'अष्टाध्यायी' भारतीय जन जीवन तथा तत्कालीन सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए एक स्वच्छ दर्पण के समान है। जिसमें शब्दों को इस प्रकार से गुम्फित किया है, जिससे उस युग के सांस्कृतिक परिवेश का साक्षात्कार होता है। तत्कालीन भूगोल, सामाजिक जीवन, आर्थिक अवस्था, शिक्षा व्यवस्था, राजनैतिक तथा धार्मिक जीवन, दार्शनिक चिन्तन, रहन-सहन, वेशभूषा एवं खान-पान का समुचित चित्रण अष्टाध्यायी में देखने को मिलता है।

अष्टाध्यायी के लिए भाषा विषयक एकत्रित करने के लिए पाणिनी ने विभिन्न प्रदेशों का भ्रमण किया। किस प्रदेश के लोग किसी शब्द विशेष के लिए कितना उतार-चढ़ाव करते थे। उच्चारण की दृष्टि से ह्स्व-दीर्घ पर कितना ध्यान देते थे। इसका वर्णन अष्टाध्यायी में मिलता है। पाणिनी ने अष्टाध्यायी में जनपद, नगर ग्राम संघ गोत्र चरण आदि की लम्बी सूची भी दी है। गोत्रों के लगभग एक हजार नाम पाणिनीय गणों में संग्रहीत किये हैं। अष्टाध्यायी में 500 ग्रामों तथा नगरों की सूची मिलती है। साथ ही तत्कालीन रीति रिवाज, कला, देवधम, उपासना, पद्धति, रहन-सहन, शिक्षा-दीक्षा, जीवन-व्यवस्था आदि का वर्णन अष्टाध्यायी में वर्णित है।

डॉ० वासुदेव शरण अग्रवाल का कहना है कि पाणिनी ने अपने पहले के सूत्रों को भाषा, अर्थ एवं विस्तार इन तीनों ही दृष्टि से पल्लवित किया है। विषय प्रतिपादन की दृष्टि से अष्टाध्यायी अपने आप में परिपूर्ण है। इसके कारण वेदों से लेकर समस्त संस्कृत वाङ्मय का अध्ययन सुलभ हो गया।

अष्टाध्यायी के आधार पर भट्टोजी दीक्षित ने सिद्धान्त कौमुदी की रचना की। जिसमें वैदिक प्रक्रिया तथा स्वर प्रक्रिया नामक दो प्रकरण है। वैदिक प्रक्रिया में पाणिनी के व्याकरण विषयक नियम समस्त वैदिक वाङ्मय में किस प्रकार लागू होते है यह बताया गया है तथा स्वर प्रक्रिया में वैदिक मन्त्रों का उच्चारण किस प्रकार से किया जाय इसका विस्तार से विवेचन किया गया है।

पाणिनी के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की किंवदन्तियां प्रचलित हैं, कथासरित्सागर में एक किंवदन्ती इस प्रकार है - वर्ष नामक एक आचार्य पाणिनी के गुरू थे। उनके पास पाणिनी और कात्यायन दोनों पढ़ा करते थे। दोनों शिष्यों में कात्यायन अधिक कुशाग्र बुद्धि के थे। कात्यायन सभी विषयों में पाणिनी से आगे थे। यह स्थिति पाणिनी को सहन न हो सकी। इसलिए वे गुरूगृह छोड़कर हिमालय पर चले गये। वहां उन्होंने शिव को प्रसन्न करने के लिए कठोर तपस्या की। शिव ने प्रसन्न होकर उन्हें प्रतिभाशाली बुद्धि प्रदान की। शिव में पाणिनी के सम्मुख 14 बार अपना डमरू बजाया। डमरू से जो ध्वनि निकली उनका अनुशरण करते हुए पाणिनी ने अइउण, ऋलृक, एओङ आदि 14 सूत्रों की रचना की जो माहेश्वर सूत्र के नाम से प्रसिद्ध है। संस्कृत का समस्त व्याकरण इन्हीं 14 माहेश्वर सूत्रों पर अवलम्बित है। अष्टाध्यायी का आधार यही 14 सूत्र हैं।

एक अध्ययन के अनुसार पाणिनी की ग्राह्यशक्ति जन्म से ही तीव्र थी उन्होंने देखा कि मानव आयु मर्यादा तथा व्याकरण के विस्तार का आपस में मेल बैठना सम्भव नहीं है। इसलिए पाणिनी ने व्याकरण में सुधार करने तथा नियमों के निर्धारण तथा अशुद्ध शब्दों को ठीक करने का निश्चय किया और व्याकरण सामाग्री का अध्ययन करने के लिए यात्रा प्रारम्भ की। यात्रा के समय उनकी अनेक विद्वानों से भेंट हुयी। इसी यात्रा के समय उनकी भेंट ईश्वर देव नाक के एक प्रकाण्ड विद्वान से हुयी। पाणिनी ने उनके सम्मुख अपने नवीन व्याकरण की योजना प्रस्तुत की। ईश्वर देव का मार्गदर्शन प्राप्त कर पाणिनी एकान्त स्थान पर चले गये। वहां बैठकर उन्होंने आठ अध्यायों के नये व्याकरण का निर्माण किया। फिर उन्होंने अपने इस ग्रन्थ को पाटलिपुत्र के राजा नन्द के पास भिजवाया। राजा नन्द की आज्ञा से इस ग्रन्थ को सम्पूर्ण मगधराज्य में पढ़वाया गया और तभी से पाणिनी मगध नरेश नन्द के मित्र बन गये। तभी से पाणिनी का यह ग्रन्थ अष्टाध्यायी के नाम से विख्यात हो गया।

वास्तव में महर्षि पाणिनी ने अष्टाध्यायी की रचना कर सम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय का महान् उपकार किया है। विश्व हमेशा ऐसे महान, योगी महर्षि पाणिनी का ऋणी रहेगा।

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे
सहायक आचार्य (साहित्य)

किं कारणं हे विधे ! ?

विश्वस्थे नहि विश्वसीति मनुजोऽविश्वस्थमैत्रींगतः
सम्बन्धश्च सुधूर्ततामुपगतस्स्वार्थादियुक्तोऽभवत्।
वित्तं लक्ष्यमहो नृणां किमपि हा नान्यत्प्रियं निश्चितं
कालोऽसौ विपरीततामुपगतः किं कारणं हे विधे ! ॥०१॥

मर्यादा गुरुशिष्ययोरपगता स्नेहः पितापुत्रयोः
दम्पत्याश्च परस्परं सुखभरस्त्यागो न सन्दृश्यते।
त्यक्त्वा गेहसुपाच्यभोजनमहो! पण्यां जनैः खाद्यते
कालोऽसौ विपरीततामुपगतः किं कारणं हे विधे ! ॥०२॥

स्वामीमूर्खवरो विवेकरहितो ज्ञानी च तत्सेवको
नम्यश्श्लाघ्यतमश्च मूढमनुजो विद्वान्प्रहेयोऽभवत्।
शिष्यश्चोच्चपदस्थितो गुरुवरो जातस्तथा निष्पदः
कालोऽसौ विपरीततामुपगतः किं कारणं हे विधे ! ॥०३॥

ज्ञानी भोजनदुर्लभोऽज्ञमनुजो लक्ष्मीपतिर्जायते
आच्छाद्यं बहुमूल्यवस्तु मनुजैर्हट्टे तथोद्धाट्यते।
मार्गेषु प्रतिभा च भाग्यमधुना सत्तासु सन्दृश्यते
कालोऽसौ विपरीततामुपगतः किं कारणं हे विधे ! ॥०४॥

पूजापाठसुकर्मधर्मनिरतः प्राच्यः जडः प्रोच्यते
भक्ष्याभक्ष्यकुकर्मपापनिरतश्श्लाघ्यस्ससमैः कथ्यते।
त्यक्त्वा स्वात्मगतं सुखं मृगसमं सर्वैर्बहिः ढूंढ्यते
कालोऽसौ विपरीततामुपगतः किं कारणं हे विधे ! ॥०५॥

डॉ.शशिकान्ततिवारी "शशिधरः
सहायकाचार्य (दर्शन)

आत्मज्ञानं विना मनुष्यजीवनं निरर्थकमिति एका विचारणा

भगवता कृपाङ्कृत्वा तत्परमतत्त्वस्य अवगमनाय मानवशरीरं दत्तमस्ति। परन्तु मनुष्यो विचारणां विना हिं संसारे पतितवान् अस्ति। अनेन भगवानपि किंकर्तव्यमितिवत् जातोऽस्ति, उक्तवान् च –

"तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेषु नराधमान्।
क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥"

इत्यर्थात् तान् द्वेषिणः पापाचारिणः क्रूरकर्मिणो नराधमान् संसारे अहं वारं वारं आसुरीषु योनिषु हि पातयामि, अर्थात् तान् घोरनरकेषु क्षिपामि इति। पुनरेवम् अकथयत् -

"आसुरीं योनिमापन्ना मूढा जन्मनि जन्मनि।
मामप्राप्यैव कौन्तेय ततो यान्त्यधमां गतिम् ॥" इति।

अर्थात् ते माम् अप्राप्य हि जन्मजन्मान्तरेषु आसुरीं योनिं हि अधिगच्छेयुः, पुनः ततोऽपि अधमगतिं प्राप्नुयुः इति।

वस्तुतस्तु परमात्मतत्त्वविषयिणीं ज्ञानप्राप्तिं विना अन्यत्कार्यसाधनम् आत्मघातः इव ; यतोहि आत्मघाती महापापी कथ्यते। उपनिषद् निगदति - "ये के चात्महनो जनाः।" इत्यर्थात् आत्मघाती अधोगतिं प्राप्नुयात्।

मनुष्यशरीरप्राप्तेः उद्देश्यं सङ्ग्रहो भोगो वा नैव –
"एहि तन कर फल बिषय न भाई।" इति।

तत्त्वज्ञानं विना हि यदि एतत् मानवशरीरं वृथा हि समाप्ततां गच्छेत् तर्हि इयमेव मनुष्यस्य महती हानिर्नाम। अतः आत्मकल्याणकामिभिर्मनुष्यैः अद्यारभ्य हि तत्त्वज्ञानबोधार्थं शीघ्रायमानैर्भवितव्यमिति।

। शुभमस्तु।

अनिल शास्त्री
लिपिक (शैक्षणिक)

ज्ञानामृतम्

अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परं तपः।
अहिंसा परमं सत्यं यतो धर्मः प्रवर्तते॥
अहिंसा परमो धर्मस्तथाहिंसा परो दमः।
अहिंसा परमं वानमहिंसा परमं तपः॥

(महाभारत अनु० २१/१९-५४)

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम तप है और अहिंसा परम सत्य है क्योंकि उसी से धर्म की प्रवृत्ति होती है।

अहिंसा परम धर्म है, अहिंसा परम संयम है, अहिंसा परम दान है और अहिंसा परम तप है।

यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्वकृतं कर्म कर्तारमनुगच्छति॥

महाभारत अनु० ४८/१४

जैसे बछड़ा सहस्रों (हजारों) गौओं में से अपनी माँ को पहचानकर उसे ढूँढ लेता है, वैसे ही पूर्व में किया हुआ कर्म भी अपने कर्ता के पास पहुँच जाता है।

इसलिए अपने मन एवं हृदय में दृढ़ निश्चय रखना चाहिए की पाप कर्म कभी ख़त्म नहीं होते, उनके दुष्परिणाम भोगने ही पड़ते हैं।

आयुषः क्षण एकोऽपिसर्वरत्नैर्न लभ्यते।
नीयते तद्वृथा येनप्रमादः सुमहानहो॥

योगवासिष्ठ - ६.१७५.७८

आयु का एक-एक क्षण भी संसार के सभी रत्नों से नही पाया जा सकता है, उस आयु को यदि कोई व्यर्थ में खोता है तो अहो! यह तो बड़ा भारी प्रमाद है।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति॥

(श्रीमद्भागवत २/६४)

विषयों के चिन्तन को सब अनर्थों का मूल बतलाया गया। अब यह मोक्ष का साधन बतलाया जाता है।

आसक्ति और द्वेष को राग द्वेष कहते हैं। इन दोनों को लेकर ही इन्द्रियों की स्वाभाविक प्रवृत्ति हुआ करती है। परंतु जो मुमुक्षु होता है वह स्वाधीन अन्तःकरण वाला होता है। ऐसा पुरुष राग द्वेष से रहित और अपने वश में की हुई श्रोत्रादि इन्द्रियों द्वारा अनिवार्य विषयों को ग्रहण करता हुआ प्रसाद को प्राप्त होता है। प्रसन्नता और स्वास्थ्य को प्रसाद कहते हैं।

चरन् वै मधु विन्दति चरन् स्वादुमुदम्बरम्।
सूर्यस्य पश्य श्रेमाणं यो न तन्द्रयते चरन्॥
चरैवेति, चरैवेति॥

ऐतरेय ब्राह्मण कर्मशील व्यक्ति ही पराक्रम, पुरुषार्थ और ज्ञान के द्वारा लक्ष्य रूपी फल को प्राप्त करता है। जैसे सूर्य को ही देखिए। सूर्य नित्य चलता है, कभी आलस्य नही करता। इसलिए हे मनुष्यों ! गतिशील रहो, चलते रहो।

डॉ. नवीन शर्मा
ज्योतिषाचार्य

संस्कृत बोधकं भारतं भूतले

रत्नगर्भा धरा सुस्मिता श्यामला।
दिव्यतीर्थास्तटाः पर्वताः सिन्धवः।
निर्झरा वाटिकाश्चात्र देवालयाः।
भव्यमेतत्प्रियं भारतं भूतले॥१॥

वेदवेदांग-सत्काव्य-रत्नाकरा।
लोकविद्याकलाः कामदा मोक्षदाः।
रम्यरामायणं श्रीमहाभारतं।
राष्ट्रमेतद्वरं भारतं भूतले॥२॥

यत्र देवी सती शारदा जानकी।
चानुसूया शिवा द्रौपदी पद्मिनी।
सन्ति सर्वा इमा वत्सला मातरः।
शक्तियुक्तं शिवं भारतं भूतले॥३॥

रामकृष्णौ हरी वर्धमानो जिनो।
गौतमः शंकरः पाणिनि नकः।
धार्मिका साधवश्चात्र देशेऽभवन्।
देशिकानामिदं भारतं भूतले॥४॥

भारतीया दयासागरा मानवा।
ज्ञानविज्ञानयोर्भास्करा: कर्मठाः।
मानवी भावना भासते संस्कृतौ।
सत्यसंशोधकं भारतं भूतले॥५॥

सन्तु बाला जवा जागरा जायिनो।
भाग्यवन्तो बुधाः राष्ट्रिया विक्रमाः।
प्राणिनो निर्भयाः सन्तु सर्वे सदा।
संस्कृतं बोधकं भारतं भूतले॥६॥

जयतु भारतम्

अमृतवचनम्

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति॥

अर्थ – व्यक्ति का सबसे बड़ा दुश्मन आलस्य होता है, व्यक्ति का परिश्रम ही उसका सच्चा मित्र होता है, क्योंकि जब भी मनुष्य परिश्रम करता है तो वह दुखी नहीं होता है और हमेशा खुश ही रहता है।

प्रश्नमञ्जरी

(१) महाभारत के रचयिता हैं ?
(क) कालिदास (ख) ब्यास (ग) वाल्मीकि (घ) वाणभट्ट
(२) ऋग्वेद का विभाजन है ?
(क) 18 पर्वों (ख) 7 काण्डों (ग) 10 मण्डलों (घ) 100 सुक्तों
(३) संस्कृत का आदिकाव्य है ?
(क) रामायण (ख) महाभारत (ग) रघुवंश (घ) भागवत।
(४) विष्णु सहस्त्रनाम स्त्रोत है ?
(क) विष्णु पुराण (ख) महाभारत (ग) भागवत (घ) रामायण
(५) शिव महिमा स्त्रोत के रचयिता हैं।
(क) पुष्पदन्त (ख) शंकराचार्य (ग) शुक्राचार्य (घ) बुधकौशिक
(६) उत्तररामचरितम् का प्रमुख रस हैं ?
(क) शान्त (ख) वीर (ग) करुण (घ) श्रृगांर
(७) उत्तररामचरितम् का प्रेणता है ?
(क) भवभूति (ख) कालिदास (ग) भारवि (घ) हर्ष
(८) गायत्री मन्त्र के द्रष्टा हैं ?
(क) वसिष्ट (ख) भारद्वाज (ग) गृत्समद (घ) विश्वामित्र
(९) नाट्यशास्त्र के प्रवर्तक हैं ?
(क) अश्वघोष (ख) भरतमुनि (ग) सायणाचार्य (घ) कालिदास
(१०) शब्द का मुख्य अर्थ होता है ?
(क) वाच्यार्थ (ख) व्यड्ग्यार्थ (ग) लक्ष्यार्थ (घ) तत्पर्यार्थ

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(चतुर्थङ्कस्य उत्तराणि)

(1) महाभारत (2) कर्मयोग (3) अर्जुनविषादयोग (4) 700 (5) कुरुक्षेत्र
(6) उश्ना (7) 41 (8) 4 (9)18 (10) शंक

व्यवहारवाक्यानि

१.	देशभक्त निर्भीक होते है।	देशभक्ताः निर्भीकाः भवन्ति।
२.	राम स्वभाव से दयालु है ।	रामः स्वभावेन दयालुः अस्ति।
३.	हम सब पढ़ते है।	वयं पठामः।
४.	मैं भोपाल जाऊँगा।	अहं भोपालं गमिष्यामि।
५.	सीता टी.वी देखती है।	सीता दूरदर्शनं पश्यति।
६.	जंगल में मोर नाच रहे है।	वने मयूराः नृत्यन्ति।
७.	भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ है।	भारतीय संस्कृतिः सर्वश्रेष्ठोऽस्ति।
८.	हम सब मिलकर कार्य करेंगे।	वयं मिलित्वा कार्यं करिष्यामः।
९.	मीना रोज जल पीती है।	मीना प्रतिदिन जलं पिबति।
१०.	हम सब एक ही संस्कृति के उपासक है।	वयं सर्वेऽपि एकस्याः संस्कृतेः समुपासकाः सन्ति।

संस्कृत हास्यकणिका

एकः बालकः विद्यालयात् शीघ्रं गृहमागतवान्।
माता – किमर्थं शीघ्रमागतः भो !
बालकः - अहम् एकं मशकं मारितवान्। अतः शिक्षिका माम् गृहं प्रेषितवती।
माता - मशकं मारितवान्, एतदर्थमेव गृहं प्रेषितवती ?
बालकः – आम माता ! मशकः शिक्षिकायाः कपोले उपविष्टः आसीत्।

पत्नी - स्वामी तव शरीरे एतत् निचोलं (शर्ट) सुन्दरं प्रतीयते।
पतिः - कियत् अपि मम गुणगानं करोतु नाम तां नूतनशाटिका न मेलिष्यति।
पत्नी (क्रोधेन) - केवलं तव निचोलं सुन्दरमस्ति मुखं तु वानरः इव अस्ति।

भारतीय संस्कृति के अनुसार जन्मदिन कैसे मनाएं

आजकल प्रायः देखने में आता है की लोग आधुनिकता और पश्चिमी सभ्यता में इतने खो गए की उन्हें यह पता ही नहीं की क्या गलत है और क्या सही। पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव में हम अपनी संस्कृति, सभ्यता एवं मनोबल को इतना अधिक गिरा चुके हैं की उन्हें उठने में न जाने कितने युग बीत जायें कहा नहीं जा सकता। प्रायः जन्मदिन बड़े ख़ुशी से मनाते हैं। ख़ैर मनाना भी चाहिए लेकिन मोमबत्ती जलाकर उसे फूंक मार कर बुझा देते हैं, केक को काट कर खिलाते हैं, उस रात्रि में जागरण के बदले प्रायः लोग मौज-मस्ती के साथ शराब और तामसिक भोजन करते हैं। यह कहाँ का नियम है, इसलिए भारतीय पद्दति से जन्मदिन मनायें और अपने प्रियजनों को दीर्घायु बनायें। शास्त्रों में जन्मदिन मनाए जाने को वर्धापन संस्कार कहा गया है। जन्म तिथि पर वर्धापन संस्कार सभी लोग संपन्न नहीं कर पाते हैं।

ऐसे में हम आपको बताने जा रहे हैं, कुछ आसान काम जिन्हें करके आप भी लंबी उम्र व स्वस्थ शरीर पा सकते हैं। जन्मदिन के दिन सुबह जल्दी जागना चाहिए। सुबह 4 बजे से 6 बजे के बीच ब्रह्म मुहूर्त होता है, इस समय में प्रतिदिन जागने से उम्र बढ़ती है। मन में गणेशजी का, अपने इष्ट देव का एवं गुरुदेव का ध्यान करें व आंखें खोलें नित्यकर्मों से निव्रित हो कर स्नान करें। हो सके तो तिल के उबटन से स्नान करें। प्रथम पूजनीय देवता भगवान गणेशजी का गंध, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप से पूजन करें। लड्डू और दूर्वा समर्पित करें। जन्मदिन के दिन दीपक व मोमबत्ती को बुझाना नहीं चाहिए। हिंदू मान्यता है कि शुभ कार्यों के लिए जलाए दीपक को बुझाने वाला व्यक्ति नरक भोगता है। जन्मदिन के दिन जितने साल की उम्र हो उतने ही दीपक किसी मंदिर में दान करना चाहिए। इस दिन जन्मनक्षत्र का पूजन किया जाता है। जन्मदिन पर अष्टचिरंजीवी महापुरुषों का पूजन व स्मरण करना चाहिए। अष्टचिरंजीवी- अश्वथामा, दैत्यराज बलि, वेद व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम और मार्कण्डेय ऋषि ये आठ चिरंजीवी महापुरुष हैं, जिन्हें अमरत्व प्राप्त है। अष्टचिरंजीवी को प्रणाम करें। जितनी बार हो सके ये मंत्र बोलें। मंत्र इस प्रकार हैं....

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तएतै चिरजीविनः॥
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोपि सर्वव्याधिविवर्जितम्॥

अर्थात् अश्वथामा, दैत्यराज बलि, वेद व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य, परशुराम और मार्कण्डेय ऋषि को प्रणाम है। इन नामों के प्रतिदिन प्रातः स्मरण करने से सभी बीमारियां समाप्त होती हैं और मनुष्य 100 वर्ष तक की उम्र को प्राप्त करता है।

ॐ कुलदेवताभ्यो नमः मंत्र से कुलदेवता का पूजन करें। मार्कण्डेय से दीर्घायु की प्रार्थना करें। तिल और गुड़ के लड्डू, दूध अर्पित करें। स्वयं भी तिल-गुड़ के लड्डू और दूध का सेवन करें। इस दिन नेल कटिंग या शेविंग नहीं करना चाहिए। माता-पिता का अशीर्वाद लें। सभी आदरणीय लोगों और अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लें। बच्चों को उपहार में सिक्का व रूपया दें। अगर हो सके तो घर में हवन कर ब्राह्मण भोजन करवाकर दक्षिणा दें व उनसे आशीर्वाद अवश्य लेना चाहिए।

आचार्य दीपक कौशिक
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

प्रयत्नो विधेयः

प्रयत्नेन कार्ये सुसिद्धिर्जनानाम्
प्रयत्नेन सद्बुद्धिवृद्धिर्जनानाम्।
प्रयत्नेन युद्धे जय स्याज्जनानाम,
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥

प्रयत्नो धीराः समुद्रं तरन्ति,
प्रयत्नेन वीराः गिरीन् लङ्घयन्ति।
प्रयत्नेन विज्ञाः वियत्यप्तन्ति,
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥

कठोरः प्रयत्नान्मृदत्वमं प्रयाति,
कठोरः प्रयत्नादसाध्यम्।
प्रयत्नादयोग्याः सुयोग्धा भवन्ति,
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥

प्रयत्नेन मुक्तिं श्रिताः भारतीयाः
प्रयत्नेन ऋद्धिं गताः भारतीयाः।
प्रयत्नेन विश्वप्रिया भारतीयाः
प्रयत्नो विधेयः प्रयत्नो विधेयः ॥

कुसुम
(शास्त्री तृतीय वर्ष)

माँ

माँ, माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार,
न त्वया सदृश्य कस्याः स्नेहम्,
करुणा-ममतायाः त्वम् मूर्ति,
न कोअपि कर्त्तुम् शक्नोति तव क्षतिपूर्ति।

तव चरणयोः मम जीवनम् अस्ति,
'माँ' शब्दस्य महिमा अपार,
न माँ सदृश्य कस्याः प्यार,
माँ त्वम् संसारस्य अनुपम् उपहार।

आदिनाथ सांवत
शास्त्री द्वितिय वर्ष (साहित्य)

एकता

मतभेदस्य विरोधस्य वा अभावः एकता इति उच्यते। एकतायाः अपरं नाम "ऐक्यं संघटनं" वा इत्यपि वर्तते। मनुष्माणां सांसारिक जीवनस्य कृते एकता महान् लाभकारी गुणोऽस्ति। यदि संसारे मनुष्येषु एकता न स्यात् तर्हि तेषां एकदिनस्यापि जीवनं कठिनं सम्पद्येत। एकतायां महती शक्तिः भवति यत् कार्यम् एकेन न कर्तुं शक्यते तद् बहुनां सम्मिलितेन समुदायेन सुगमतया एव भवति। वर्तमानसमये एकतायाः महान् अभावोऽस्ति। परिवारे समाजे देशे तथा सम्पूर्णे संसारे सर्वत्रैव अनेकतायाः मतभेदस्य च भंयकरः झंझावातः प्रवाहमानः दृश्यते। एतस्य प्रधानं कारणं तु स्वार्थपरता एव अस्ति। अतः एकतायाः स्थापनाय परस्परं स्नेह-सौहार्द-वर्धनाय च स्वार्थसाधनेन सहैव परेषामपि स्वार्थ रक्षणाय उपरि ध्यानदानं परमावश्यकं वर्तते।

रजनी (संस्कृत पत्रकारिता)

सुभाषितानि

सा विद्या या मदं हन्ति, सा श्रीर्याऽर्थिषु वर्षति।
धर्मानुसारिणी या च, सा बुद्धिरभिधीयते ॥

वास्तविक विद्या (ज्ञान) वही है जो अहंकार का नाश करती है, धान वही है जो याचकों को मिलकर सन्तुष्ट करे और जो धर्म का अनुसरण करे वही वास्तविक बुद्धि मानी जाती है।

अद्यतनीयाः बालकाः युवानश्च

यस्मिन् भारतदेशे बालकैः ब्रह्मविद्या, शास्त्र विद्या, इत्यादी विद्या शिक्ष्यते स्म। तत्रैव अद्यतनीयाः बालकाः किङ्कर्वन्तः सन्ति। यस्य भारतदेशस्य दिनारम्भः संस्कृतमन्त्रेण यज्ञेन भजन - कीर्तनेन भवति स्म। तत्रैव अद्य दिनारम्भः" जाने मेरी जाने मन बचपन का प्यार मेरा भूल नहीं जाना रे" इत्यनेन गीतेन भवति। नाद्याभिभावकाः जागरूकाः सन्ति न च बालकाः। पूर्वं बालकाः खेलक्षेत्रमागत्य बहव्यः क्रीडाः खेलन्ति स्म, परन्त्वद्य सर्वाः क्रीडाः अस्माकं दूरवाण्यामेव समाहिताः वर्त्तन्ते। अभिभावकाः अपि स्वमित्रेण सह दूरवाण्यां संलग्नाः सन्ति।

पूर्वतनीयाः ये बालकाः भवन्ति स्म ते स्वदेशं प्रति, स्वराष्ट्रं प्रति, स्वसामाजं प्रति, स्वकर्तव्यं प्रति, स्वपितरौ प्रति जागरूकाः उत्तरदायिनः भविन्ति स्म। अद्य बालकाः चलचित्राभिनेताभिनेत्रीणाञ्च बहूनि नामानि जानन्ति। परन्तु स्वराष्ट्रस्य के के कति क्रान्तिकाराः सन्ति विषयेऽस्मिन् किमपि न जानन्ति। अधिकाः तु इदमपि न जानन्ति यदस्माकम्भारतदेशः कदा स्वतन्त्रतां प्राप्तवान्। यस्यदेशस्य युवानः बालकाश्च स्वराष्ट्रविषये किमपि न जानन्ति तर्हि तस्यराष्ट्रस्योन्नतिं कथं सम्भवेत्। अद्यत्वेऽभिभावकाः अपि स्वबालकान् न बोधयन्ति स्मारयन्ति च यत् तेषां देशस्य इतिहासः कः आसीत्, भविष्ये किं कर्तव्यमस्ति स्वदेशस्य कृते।

बालकाः स्वराष्ट्रविषये किमपि न जानन्ति स्वराष्ट्रं प्रति जगरूकाः न सन्ति। एतेषामुत्तरदायिनः के सन्ति। अभिभावकाः, शिक्षकाः, समाजाः, उत सर्वकाराः।

सर्वाधिकाः युवानः बालकाश्च भारते एव सन्ति परन्तु भारतस्य तु अन्यैव दशा अस्ति। अधिकांशाः युवानः बालकाश्च मद्यपानेन, धुम्रपानेन, कामवसनया च युक्ताः सन्ति। एतेषां सर्वेषामुत्तरदायिनः मूलरूपेणाभिभावकाः एव सन्ति तद्पश्चात् सर्वकाराः।
अभिभावकाः सर्वकाराश्च यदि भारतस्य यूनः बालकान् च प्रत्यधुनापि किञ्चिदवधानं दद्युः तर्हि भारतस्योन्नतिं कोऽपि नावरोद्धुं शक्नोति। अथ च भारतं पुनः स्वनष्टमधिकारं स्थानमञ्च प्राप्तुं शक्नोति।

पंकज
(शास्त्री, द्वितीय वर्ष)

नारी-जीवन का अन्तिम आदर्श

कुछ माँगा नही, कुछ चाहा नही
बदला बस खुद को कि-रिश्ता टूट न जाये कहीं
आदतों को बदला, चाहतों को बदला,
भले मेरे अरमानों ने, अपनी करवट को बदला
समन्दर की एक बूंद, बन जाऊ भले
बस समन्दर में, मेरा अस्तित्व तो रहे---

कर्णिका पाठक द्वारा लिखी यह पंक्तिया प्रत्येक स्त्री के मन का बात कह रही है। स्त्री के पास प्रेम करने की और जिस पर प्रेम करेगी उसके लिए सर्वस्व अर्पण करने की शक्ति है। अनादि काल से ही स्त्री ने अपनी इस शक्ति का प्रयोग भी किया है तभी तो आज 21वीं सदी में धरती से लेकर पाताल तक हर क्षेत्र के निर्माण में स्त्री का अतुलनीय योगदान रहा है।

भारत की परपंराओ में सर्वश्रेष्ठ कालों में से एक रामायण काल था। रामकाल में स्त्रियाँ स्त्रियाँ ही थी व पुरुष पुरुष ही थे। पुरषों का काम स्त्रियाँ कर सकती है इस विषय में रामकाल में कोई शंका नही थी। तभी तो राम के वनवास में जाना मान्य किया तो वशिष्ठ ने स्पष्ट शब्दों में कहा:-

"आत्मा हि दारा सर्वेषां वारसंग्रहवर्ति नाम्।
आत्मेयमिति रामस्थ पालचिष्यति मेदिनी ॥"

अर्थात स्त्री पति की आत्मा ही है। सीता राम की आत्मा होने के कारण जब राम वन को प्रस्थान करेंगे तो सीता ही राज्य चलायेंगी। परन्तु संदेह तो इस बात का है कि क्या पुरुष भी स्त्रियों का काम कर सकेंगे ? गर्भधारण, शिशुपालन, उनका शिक्षण इत्यादि कार्य पूरुष कदापि नहीं कर सकते। स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता के नाम पर एकमात्र भार जो पुरुष पर है वह भी कम हो जाता है न केवल इतना अपितु इसी होड में आगे निकलने में लगी स्त्रियां प्रकृति प्रदत्त गुण यथा वात्सल्य, मृदुता, करूणा खो रही है। स्त्री डॉक्टर न बनेगी तो चलेगा, वकील न बनेगी तो भी कुछ न बिगड़ेगा परन्तु स्त्री मामा, सहचरी व सखी तो अवश्य बनें। जिन गुणों के कारण स्त्री की विशेषता है उन्हें बचाने के प्रयत्न में एक आदर्श की आवश्यकता है। उस आदर्श के रूप में अन्तिम विकल्प अर्थात् सीता माता है।

माधवी
आचार्य प्रथम वर्ष

शहीद भगत सिंह

भारत के लिये तू हुआ बलिदान भगत सिंह।
था तुझको मुल्को-कौम का अभिमान भगत सिंह॥

वह दर्द तेरे दिल में वतन का समा गया।
जिसके लिये तू हो गया कुर्बान भगत सिंह॥

वह कौल तेरा और दिली आरजू तेरी।
है हिन्द के हर कूचे में एलान भगत सिंह॥

फांसी पै चढ़के तूने जहां को दिखा दिया।
हम क्यों न बने तेरे कदरदान भगत सिंह॥

प्यारा न हो क्यों मादरे-भारत के दुलारे।
था जानो-जिगर और मेरी शान भगत सिंह॥

हरएक ने देखा तुझे हैरत की नजर से।
हर दिल में तेरा हो गया स्थान भगत सिंह॥

भूलेगा कयामत में भी हरगिज न ए 'किशोर'।
माता को दिया सौंप दिलोजान भगत सिंह॥

(ब्रिटिश राज के प्रतिबंधित साहित्य से)

भारतीय पर्व होली

अस्माकं देशे अनेका: उत्सवा: भवन्ति। तेषु होलिकोत्सव: उत्साहवर्धक: भवति । अयम उत्सव: वसन्ते भवति । फाल्गुन पूर्णीमायां होलिकादाह: भवति। अस्मिन दिवसे सर्वे जना: गृह-गृहे गत्वा रंग अबीर: परस्परम् आलेपनम् कुर्वन्ति।

जना: सायंकाले बहुविधम् गीतं गायन्ति। अस्मिन् दिवसे गृह-गृहे विविधानि निर्मीयन्ते ! होलिकोत्सवे एका सुत्रसिद्धा कथा प्रस्तूयतेऽत्त हिरण्यकशिपो: भगिनी होलिकास्वभृआतू संतोषाय स्वकीयं भृतृजं प्रच्छ्वन्न अन्गके निधाय सगर्व वद्धौ प्रविष्टा यत: वरदान प्रमावद् व्रछि: तां दुगर्धु न प्रभवतस्मि किंतु अद्य भगवत: कृपया होलिका भस्म्साज्जता । बालक: प्रहलाद ईश्वरस्य प्रसादेन पृतापेन च सुरक्षित: आसीत। अंते च भगवान नृसिंह: हिरण्यकषिपुम् अमारयत। प्रह्लादस्य चरित्रेण ऐषा शिक्षा प्राप्त भवति निन्दन्तु नीतिनिपुणा, यदि वा स्तुवन्तु लक्ष्मी: समाविषतु गच्छतु वा यथेष्ठम् अदैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा, न्यायतपथ: पृविचलंति पदं न धीरा:

नीलम (आचार्य साहित्य)

पिता की याद

आज उठते ही मेरी आंखें भर आई है
आज मुझे फिर पिता की याद आई है

हर पिता की तरह उन्होंने बाहों में सुलाया था
थोड़ा बड़ा हुआ मुझे कंधे पर बिठाया था
मुझे हंसाने सुलाने को बाहों में झूलाया था
पा..पा.. कह कर उन्होंने चलना सिखाया था

जब भी कोई होती थी मुझे उलझन
भारी भारी जब होता था मेरा मन
जब बैठ जाते उनके पास एक क्षण
उसी वक्त हल्का हो जाता मेरा तन मन

कई बार लगता जैसे कमरे में लेटे हो
कई बार लगता जैसे आंगन में बैठे हो
कई बार लगता जैसे वो हमसे ऐंठे हो
कई बार लगता है जैसे खुशियां समेटे हो

हर जगह उनकी यादें देती दिखाई है।
आज मुझे फिर पिता की याद आई है॥

जब वह थे, तो ना सर पर कोई भार था
उनका मुझ पर खुशियों भरा प्यार था
उनको बताते ही हर सपना साकार था
उनके समय खुशीभरा पूर्ण परिवार था

उनके जाने के बाद, पिता बिन हालात बुरी है
जिम्मेदारियों का बोझ है, सब इच्छाएं अधूरी है
बंध गया एक बंधन में, बस हर तरफ मजबूरी है
चली गई आजादी सारी,सब सपनों में भी दूरी है

मेरी हिम्मत, मेरी इज्जत, मेरी पहचान थे पिता
मेरी दौलत, मेरी ताकत, मेरी शान थे पिता
मेरी खुशी, मेरा मान, मेरा अभिमान थे पिता
मेरी इच्छा पूरी करने वाले, मेरे भगवान थे पिता
घर के हर कण में उनकी यादें समाई है
आज भी उनकी बातें देती सुनाई है

प्यारे लाल
लिपिक (शैक्षणिक शाखा)

मानवता

मानवता मनुष्य होने की पहचान है मानव में मानवता का स्पर्श रहना जरूरी है यह एक स्वाभाविक चीज है जो हर इंसान में होनी चाहिए मानवता को इंसानियत या मनुष्यता भी कहते हैं क्योंकि यह किसी के भी व्यक्तित्व को बताती है मानवता दया का अपर नाम हैं।

समस्त संसार का एक ही मूलमंत्र होना चाहिए, वो है जीवमात्र पर दया करना यह दया भाव मनुष्य का मनुष्य के प्रति होती है जीवमात्र पर दया करना ही मानवता है पृथ्वी पर मनुष्य सबसे उत्तम और सर्वश्रेष्ठ प्रजाति है हमारा यह दायित्व है कि हम सभी के प्रति मानवता निभाए मानवता रखने वाला मनुष्य सदैव परोपकार करता हैं।

शिवानी (आचार्य द्वितीय वर्ष)

ऑल इण्डिया इन्टर विश्वविद्यालय ताई-कवाण्डो प्रतियोगिता 2021-2022 में विश्वविद्यालय के शास्त्री प्रथम वर्ष के विद्यार्थी दीपक ने प्रथम, द्वितीय, तृतीय चरण में प्रथम स्थान प्राप्त कर विश्वविद्यालय का नाम राष्ट्रीय स्तर पर रोशन किया।

वार्त्तापत्रम्वार्त्तापत्रम्

अर्वाचीनकाले मानवस्य जीवनमस्ति । वार्त्तापत्रम् अस्माकं ज्ञानस्य गंङ्गा इव । यथा प्रभाते करदर्शनम् आवश्यकं सञ्जताम् । वार्त्तापत्राणां महत्त्वम् एवम् अनन्यसाधारणम्। विविधा: वार्ता: विस्ताररूपेण वार्त्तापत्रे वर्तन्ते। वार्ता: समाहरन्ति। सम्पादका: ता: वार्त्ता: सम्पादयन्ति जनानाम् अग्रे स्थापयन्ति च। पी. टी. आय्, यू. एन्. आय्. समाचार भारती इत्यादय: विख्याता: वार्त्तासंस्था:। अमुना एव दूरस्थिता: जना: देश-विदेशप्रदेशजनपदादीनां समाचारै: अवगता: भवन्ति। अनेन माध्यमेन अत्यल्पसमयेनैव सामाजिकराजनैतिक-आर्थिक-गतिविधय: सम्पूर्ण देशविदेशे प्रचारिता: भवन्ति । मुख्यत: मानव: संवेदनशील: प्राणी विद्यते । असौ सर्वदा स्वस्य स्वसमाजस्य देशस्य राष्ट्रस्य च उन्नतिम् इच्छति:।

शीतल (संस्कृत पत्रकारिता)